संतान से अत्यधिक प्रेम करती हैं। चुप्पी। संजय साहस खोज रहा था। नारायणी आमतौर पर जिस अनुनय से बोलती है, बोली-

''लगता है बच्चों ने आज आपको थका डाला है। मारपीट करना आपका स्वभाव नहीं है संजय जी...

संजय ने आंखें नहीं खोली। बरौनियां जरूर फड़फड़ाई।

''... कुछ डिसकस करना चाहती हूं। सामान्य स्थिति में तो सभी निभाते हैं, हमारी स्थिति कुछ अलग है। शायद आपको याद हो बच्चों को सुविधा और सुरक्षा देने के लिए हमने एक साथ रहने का उपाय किया है। मुझे लगता है तुहिना को आप स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। सच कहूं तो मयार के साथ सामंजस्य बनाने में मुझे भी दिक्कत हुई है। संतान और संतान जैसे में फासला है। मैंने देखा मयार मुझ पर भरोसा करता है तो मैंने उसके भरोसे को बनाए रखने की कोशिश शुरू कर दी। धीरे-धीरे मैं उसे स्नेह करने लगी। हमें ही नहीं नई स्थिति को अपनाने में बच्चों को भी दिक्कत हुई होगी। तुहिना मेरे साथ इसी रूम में सोती थी। अलग सोने को तैयार नहीं थी। मैंने उसे समझाया, तब मानी। अब तो मयार के साथ इतनी खुश रहती है,... और मुझे डर है अब तो माहौल बनने लगा है, बच्चों पर गलत असर आएगा...

संजय शर्मसार।

''... तुहिना बताती है,मयार ने भी बताया आप उसे टीज करते हैं। फर्क मैं भी समझ रही हूं। आपको देखकर खुश होने वाली बच्ची आपसे मतलब नहीं रखना चाहती पर मुझे उम्मीद थी एक दिन चीजें आसान हो जाएंगी।''

संजय, शव की तरह निश्चेष्ट पड़ा है।

''... आज बच्चे किस यातना से गुजरे। कह रहे हैं उन्हें हॉस्टल भेज दिया जाए...

संजय के चेहरे पर स्याह-सफेद रंग।

''... हमें जो चीजें अच्छी लगती हैं उनके साथ वे चीजें भी स्वीकार करनी पड़ती है जो अच्छी नहीं लगतीं। ऐसा न कर हम दूसरों को तकलीफ देते हैं, खुद भी गहरी तकलीफ में रहते हैं। स्वीकार कर लो तो सामने वाले की ही नहीं हमारी भी तकलीफ कम हो जाती है...

संजय स्पीचलेस। शब्द ढूंढे नहीं मिल रहे हैं।

''... तुहिना को आप इतना मानते थे। अब यह छोटी सी बच्ची दिक्कत देने लगी? तुहिना के साथ आपको निभाना ही कितना है? शादी हो जाएगी। चली जाएगी। मयार के साथ मुझे जीवन भर निभाना है...''

संजय विचलित। स्नायु ढीले पड़ रहे हैं।

''... तुहिना को लेकर कुछ अड़चन या असमंजस है तो हम अलग हो सकते हैं। आपका खाना मेज पर रख दिया है। तुहिना सदमे में है। तेज बुखार है बच्ची को। मैं उसके कमरे में सोऊंगी।''

संजय पूरी तरह विमूढ़।

निस्संग सा पड़ा रहा। सोचना नहीं चाहता लेकिन नारायणी स्थिति का जो विश्लेषण कर गई, विचारों की आंधी चल पड़ी। सच है, इस घर में वह बहुत अच्छे पापा के रूप में दाखिल हुआ था। दूरदर्शी मेनीफेस्टो के साथ। आज लग रहा है मेनीफेस्टो में तुहिना के प्रति जवाबदेही नहीं थी। नारायणी की संगत और मयार को साफ-सुथरे, तौर-तरीके वाले घर की सुरक्षा और सुविधा दिलाने का ध्येय था। आज शायद नारायणी का धीरज और अनुनय खत्म हो गया है। विभाजन रेखा खींचना चाहती है बच्चों के साथ रहेगी। उसे इस घर में रहना है तो अपनी बेवकूफी और क्रूरता के साथ अकेला पड़ा रहे। शायद फैसला करना चाहती है तुहिना को संकट में डाल इस रिश्ते को नहीं ढो सकती। घर छोड़ना पड़ा तो उसी आलोचना और फुसफुसाहट से पुनः गुजरना पड़ेगा जिससे नारायणी से विवाह कर गुजर चुका है। इस घर से प्राप्त सुरक्षा, सुविधा मयार से छिन जाएगी। मयार ने साथ जाने से मना कर दिया तो करारी हार होगी। बलपूर्वक ले जाने पर चला जाएगा पर उसे माफ नहीं करेगा।.... संजय पूरी तरह बेचैन हो गया। इतना कि झटके से उठ बैठा। इच्छा हुई जोर से चीखे। नहीं चीखेगा तो दिमाग की नसें फट जाएंगी। लगा दीवारों से टकराता हुआ तेजी से घूमकर अपना सिर फोड़ ले। नहीं चीखा। जैसे कंठ में आवाज नहीं है। खड़ा नहीं हुआ। जैसे पैरों में रक्त संचार नहीं है। माहौल तजबीजने की कोशिश करने लगा। रात का आठ-तीस है लेकिन मध्य रात्रि की नीरवता का अनुमान होता है। कहीं से कोई आहट, आभास नहीं मिल रहा है। बैठा रहा विमूढ़ होकर। निस्संग। देर बाद चोरों की भांति दबी चाप से शयन कक्ष से बाहर आया। अपराधी की तरह तुहिना के कमरे में झांका। रात्रि बल्ब के मद्धिम प्रकाश में नारायणी के एक तरफ तुहिना सोई है, दूसरी तरफ मयार। आज घर जिस कहर से गुजरा है नारायणी चाहती तो मयार को शयन कक्ष में भेज सकती थी कि आज से अपने पापा के पास रहो। लेकिन यह तुहिना और मयार को समभाव से समीपता दे रही है। संजय ने तुहिना को देखा। इस घर में इसका वर्चस्व रहा होगा। बड़ी सरलता से घर को मयार और उसके साथ बांट लिया। इसकी चाल में खरगोश सी चपलता और तेजी होती थी। मंद पड़कर चाल क्षीण हो गई है। आघात से बुखार आ गया। मयार की कितनी केयर करती है। उसके जूतों में पॉलिश तक कर देती है। इच्छा हुई नारायणी के सम्मुख घुटनों पर बैठ कर विनम्रता से कहे- नारायणी जी आप ठीक कहती हैं। बात सिर्फ स्वीकार-अस्वीकार की है। अस्वीकार करो तो समस्या है। स्वीकार कर लो तो समाधान है। मयार को इस घर से अलग करने की कल्पना मुझे डराती है। मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगा जब मयार और तुहिना का, विश्वास जैसे शब्द से विश्वास उठ जाए। मुझे एक मौका दें। नहीं कह सका। कहने का यह सही वक्त नहीं है। नारायणी इसे त्वरित संवेदना समझेगी या दिखावा। मयार और तुहिना इस वक्त नारायणी की समीपता में खुद को पूरी तरह सुरक्षित पा रहे होंगे। अपनी उपस्थिति का एहसास करा इनसे इनकी समीपता, सुरक्षा,नींद, सुकून नहीं छीन सकता।

संजय दबी चाप से जिस तरह आया था उसी तरह शयन कक्ष में चला गया। रात लम्बी है लेकिन हर रात की सुबह होती है। सुबह पता नहीं कैसा मंजर होगा। कैसे इन तीन प्राणियों का सामना करेगा? संशय में हैं संजय जी। ■